International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.10 No.5 May– June 2023

रागरचनांजलि ग्रंथ के रचयिता विदुषी अश्विनी भिडे देशपांडे का जीवन दर्शन

प्रा.डॉ. अमोल वासुदेवराव गावंडे
संगीत विभाग, सीताबाई कला वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,अकोला(महाराष्ट्र)४४४००१
Corresponding Author – प्रा.डॉ. अमोल वासुदेवराव गावंडे
Email:-amolwgawande4@gmail-com
DOI- 10.5281/zenodo.8042519

पृष्ठभूमि :–

आपका पूरा नाम अश्विनी गोविंद भिडे है। मूल, जन्म से ही भारतीय होने के साथ आप मुंबई निवासी है। भारतीय शास्त्रीय संगीत में आप 1980 से निरंतर साधना कर रही है। विदुषी अश्विनी भिड़े–देशपांडे इनका जन्म 7 अक्टूबर 1960 में हुआ है। आप महाराष्ट्र मुंबई की एक हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत विश्व प्रसिद्ध गायिका हैं। आप भारतीय संगीत के लोकप्रिय जयपुर–अतरौली घराने की परंपरा से ताल्लुक रखती हैं। जयपुर अतरौली ख्याल गायकी परंपरा पर पूरी तरह से आधारित, आप दुनिया भर में समझदार आलोचकों और संगीत प्रेमियों से उच्च प्रशंसा और आशीष अर्जित करने वाली अपार सार्वजनिक प्रशंसा के कलाकार के रूप में विकसित हुई है यह भारतीय संगीत के प्रति अद्‌भुत है। आपके रागदारी संगीत की विशेषता है कि, आलाप तथा तान मिठास के मिश्रण के साथ–साथ जीवंतता और भावना और राग सौंदर्य, उसका राग चित्रण, राग के व्याकरण पर एक अटूट पकड़ दिखाता है, इन विशेषताओं के माध्यम से आपके गायन में एक आत्मीयता बनाए रखता है। संगीत के गायन क्षेत्र में वह लगभग सभी गायन शैलियां जैसे ख्याल, भजन, ठुमरी और उपशास्त्रीय गीत प्रकार विशेष शैली से गाति है। जयपुर अतरौली घराने के गायन शैली में अपने खुद की गायन शैली से प्रभावित कर रही है। इसके माध्यम से आपने विश्व भर में अनेक श्रोताओं का निर्माण करने में सफल रही है। भारतीय शास्त्रीय संगीत को एक अलग ऊंचाई प्राप्त कर देने में आपका विशेष कार्य निरंतर चल रहा है।

प्रारंभिक जीवन और संगीत प्रशिक्षण :–

मजबूत संगीत परंपराओं वाले परिवार में मुंबई में जन्मी, आपने नारायणराव दातार के मार्गदर्शन में अपना प्रारंभिक संगीत शास्त्रीय प्रशिक्षण शुरू किया। फिर उन्होंने गंधर्व महाविद्यालय से अपना संगीत विशारद पूरा किया। तब से वह अपनी मां माणिक भिडे से जयपुर–अतरौली शैली में संगीत सीख रही हैं। अश्विनी को 2009 में गुरु रत्नाकर पाई के मृत्यु तक मार्गदर्शन भी प्राप्त हुआ है। सही मायने में कहा जाए तो अश्विनी भिड़े को संगीत की शिक्षा उन्हें अपनी मां मानिक भिड़े से अधिक समय प्राप्त हुई है। आप ने अपनी मां, गुरु के मार्गदर्शन में जयपुर गायकी के सभी पारंपरिक पहलुओं को आत्मसात करना शुरू कर दिया,आपकी माता 'माणिकताई' का संगीत प्रशिक्षण 15 साल की उम्र में मधुकरराव (नाना) सदोलीकर, उनके बड़े भाई वामनराव सडोलीकर के शिष्य और भुरजी खान (अल्लादिया खान के सबसे छोटे बेटे) के मार्गदर्शन में शुरू हुआ। इस प्रकार उन्हें जयपुर–अतरौली घराने में एक मजबूत नींव मिली। इसके बाद उन्होंने कुछ महीनों के लिए पुणे में अनुभवी किराना और आगरा घराने के गायक 'माणिक वर्मा' से गायन का अध्ययन किया। आपकी माता शादी के बाद जब वह मुंबई चली गईं, तो उन्होंने मोगुबाई कुर्दीकर से सीखने का फैसला किया। जब मोगुबाई उन्हें बुलाया, तो मोगुबाई घर पर नहीं थी और वह मोगुबाईकी बेटी किशोरी ताई थी, जिससे वह पहली बार मिली थी। इस तरह इन्हें मोगुबाई कुर्डीकर और किशोरी ताई से माणिक ताई इस प्रकार लगभग 16 वर्षों (1963–1980) की लंबी अवधि के लिए शिष्य बनी रहीं, जिसमें उन्होंने किशोरीताई की गायकी और शैली का गहराई से अध्ययन किया और रागदारी–संगीत की जड़ को समझ लिया। उन्होंने किशोरीताई के साथ बड़े पैमाने पर देश विदेश यात्रा की, अपने सभी लाइव संगीत कार्यक्रमों और रेडियो प्रदर्शनों में मुखर समर्थन प्रदान किया। उपरोक्त जानकारी संक्षिप्त में देने का कारण मोगुबाई कुर्दीकर, किशोरीताई आमोणकर इनके गायकी की छाप हमें अश्विनी भिड़े देशपांडे इनके गायकी में दिखाई देते हैं। जो सहज अपनी मां से उन्हें प्राप्त हुई।

संगीत के साथ विज्ञान का अध्ययन :–

आपने माइक्रोबायोलॉजी में मास्टर्स डिग्री हासिल की है और भाभा एटॉमिक रिसर्च सेंटर से बायोकेमिस्ट्री में डॉक्टरेट डिग्री प्राप्त की है, अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मंडल से संगीत विशारद और संगीत में मास्टर्स डिग्री हासिल की है। संगीत विषय के साथ साथ माइक्रोबायोलॉजी मास्टर डिग्री और बायोकेमिस्ट्री में डॉक्टरेट की डिग्री यह उनके ज्ञान में चार चांद दर्शाता है।

शास्त्रीय संगीत आजीविका (करियर) :–

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत और प्रशिक्षित माइक्रोबायोलॉजिस्ट और बायोकेमिस्ट्री में पीएचडी आपके लिए दोनों जीवन का हिस्सा है और आपने उन्हें कभी भी दो अलग दुनिया के रूप में नहीं माना। आपके लिए वे हमेशा पूरक थे, एक दूसरे के पूरक। आप एक ऐसे घर में पली–बढ़ी हैं जहां हर कोई, आपके माता–पिता और आपके दादा–दादी, हर कोई संगीत में रुचि रखता था। आपको संगीत में बहुत पहले ही इसे सीखने के लिए शुरू किया गया था, न कि बाद में उसे एक पेशे के रूप में लेने के विचार से। आपको बताया गया था कि ''संगीत अच्छा है और यह आपकी परंपरा का हिस्सा है, इसलिए आपको सीखना चाहिए, और जब आप बड़े हो जाएंगे तो हम देखेंगे कि क्या आप इसे लेना चाहते हैं।'' इसलिए आपने इसे अपनी परंपरा और भारतीय संगीत के प्रति प्यार के लिए, इसकी सुंदरता के लिए और इसके ज्ञान के लिए सीखा।

प्राप्त जानकारी अनुसार जहां तक आपके शैक्षणिक गतिविधियों का सवाल है, आप स्कूल और कॉलेज में हमेशा एक मेधावी छात्र रही है। आपने अपने पिता की तरह वैज्ञानिक शोध करियर बनाने की इच्छा थी। इसलिए आपने जीव विज्ञान, जैव रसायन और सूक्ष्म जीव विज्ञान लिया। लेकिन साथ–साथ, आपने संगीत शिक्षा भी समानांतर में चल रही थी और यह आपके जीवन में खूबसूरती से एकीकृत हो गया जैसा कि आपके माता–पिता के जीवन में था। जैसे कोई बच्चा स्कूल से घर आता है, घर का काम करता है, उसी तरह आपने अपना दैनिक संगीत रियाज किया। इसलिए यह आपके साथ रहा और बाद में, जब आपने अपनी पीएचडी पूरी की, तो अपने संगीत को आजमाने का फैसला किया। जब तक आपने अपनी डॉक्टरेट की पढ़ाई पूरी नहीं की, तब तक आपने संगीत में एक पेशेवर करियर पर विचार किया। आप खुद देखना चाहता थी कि क्या आप इसे करने में खुश है, आप ने तब शुरू किया था और आप रुकी नहीं है। माइक्रोबायोलॉजिस्ट और बायोकेमिस्ट्री में पीएचडी होने के कारण आपका भारतीय संगीत में कार्य करते समय एक विश्लेषणात्मक दिमाग और साथ ही संगीत के विषय के प्रति आपका दृष्टिकोण अधिक व्यवस्थित हुआ है।

अध्यात्म के प्रति अश्विनी भिड़े की रुचि :–

आपके मतों अनुसार आप बहुत आध्यात्मिक व्यक्ति नहीं हैं, हालांकि लोग संगीत को बहुत आध्यात्मिक मानते हैं। दूसरी ओर, आपको लगता है कि यह आपके लिए बहुत चिकित्सा है, यह सुखदायक है, यह ध्यान और चिंतन करने वाला है, और यह कुछ ऐसा है जो आपको अंत में खुशी देता है। आप आध्यात्मिक गतिविधियों में नहीं हैं और आपके पास आध्यात्मिक गुरु नहीं है और आप आध्यात्मिक प्रवचन और इस तरह के लेखन नहीं पढ़ती है।

किताबें पढ़ने, लिखने की रुचि :–

आपको बायोग्राफिकल किताबें पसंद हैं। आप अंग्रेजी पढ़ने में बहुत धीमा है लेकिन आप मराठी साहित्य बहुत दिलचस्पी से पढ़ती है, आपको लिखना पसंद है। आपके मतों अनुसार शायद आपको वह वैज्ञानिक लेख लाना चाहिए था, जिसमें आपने संगीत और विज्ञान, संगीत के भीतर विज्ञान और संगीत के विज्ञान के बारे में बात की हो। यह मराठी विज्ञान परिषद की एक पत्रिका में प्रकाशित हुआ था, इसलिए यह मराठी में है और संगीत के वैज्ञानिक पहलुओं के बारे में है। अतीत के संत कवि कबीर, सूरदास, मीरा बाई के साहित्य को पढ़ना आपको शौक है। आपने पहली बार सूरदास, सूरसागर नामक एक पुस्तक को पढ़ा, जिसमें नौ सौ विषम कविताएँ हैं। पहली बार जब आपने इसे पढ़ा, तो आपने इसे एक ही बार में पूरी तरह से पढ़ लिया, लगभग ३ दिनों में सभी नौ सौ कविताएँ पढ़ लीं। आपको नई दिशाएँ मिलती हैं। फिर आपने उनके कुछ भजनों को रचनाओं में बनाया है। आपको कबीर, मीरा, तुकाराम और ज्ञानेश्वर को पढ़ना पसंद है। आपका कहना है कविताएँ कवि का केवल दार्शनिक भाव ही नहीं देतीं, वे कवि के जीवन का भी विचार देती हैं कि उसे किस प्रकार का जीवन व्यतीत करना चाहिए, बहुत प्रेरणादायक है।

संगीत एवं विज्ञान :–

आपने ''श्रुतियों के बारे में बात की है'', यह क्या है कि संगीत के बाकी हिस्सों से भारतीय संगीत को अलग बनाता है, श्रुति यह है की ... हमारे पास स्तरों षड्ज–पंचम संवाद सा की तरह पा के लिए 2 तरह से 3 है तो प 1.5 गुना सा है। इस प्रकार यदि षडज–पंच संवाद बन रहा है, जो संवाद का सबसे मूल आधार है, तो आप इसे राग में करते हैं और आप उस अंतर का सम्मान करते हैं। उदाहरण के लिए, अगर मैं एक है रिषभ तो अपनी प्राकृतिक संवाद हो जाएगा धैवत है, क्योंकि यह है षड्ज–पंचम फिर से। कुछ राग के लिए यदि रिषभ है कोमल तो उसकी धैवत कोमल भी होना चाहिए, क्योंकि षड्ज–पंचम संवाद यह बनाए रखने के लिए जरूरी है। यदि श्री जैसे राग में वह कोमल ऋषभ श्रुति में थोड़ा कम है तो तदनुसार कोमल धैवत श्रुति में नीची होगी। इस संवाद को बनाए रखना बहुत आवश्यक है और यह भारतीय संगीत की नींव है। आपने तानपुरा में विज्ञान के बारे में भी बात की है, तानपुरा इतना अभिन्न और महत्वपूर्ण हिस्सा क्यों है, न केवल मुखर संगीत, बल्कि यह सभी भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक अनिवार्य हिस्सा है, सूरसागर देता है।

मेरी क्यूरी की जीवनी से प्रेरित :–

आपको उन कार्यों को पढ़ना भी पसंद है जो आपको प्रेरित करते हैं और इस कारण से आपको जीवनी पढ़ना पसंद है। उनकी बेटी द्वारा लिखी गई मेरी क्यूरी की जीवनी जो आपको सबसे ज्यादा पसंद आई है। उनकी एक बेटी भी नोबेल पुरस्कार विजेता

थी, लेकिन दूसरी बेटी ईव क्यूरी ने अपनी मां की जीवनी लिखी थी। यह अंग्रेजी में मूल नहीं था लेकिन आपने अंग्रेजी अनुवाद पढ़ा है और यह सुंदर था। आपको चार्ली चौप्लिन की आत्मकथा भी बहुत पसंद थी।

जिज्ञासु संगीतकार :–

अश्विनी गुजरात की एक स्वादिष्ट वस्तु भाकरवड़ी की मदद से उसे समझाती है जिसे वह अपने मेहमानों के साथ साझा करना पसंद करती है। "कोई भी इसे बाजार में आसानी से प्राप्त कर सकता है, लेकिन मैं उससे संतुष्ट नहीं हूँ। मैं जानना चाहता हूँ कि सामग्री क्या है, नुस्खा पता करें और फिर सोचो कि मैं इसमें कैसे सुधार कर सकता हूँ। मैंने उसे सिर्फ इसलिए पकाने की कोशिश की क्योंकि मुझे यह पसंद आया। बाजार में आपको जो भाकरवड़ी मिलती है वह काफी सख्त होती है लेकिन मैंने इसे एक स्वादिष्ट वस्तु में बदल दिया है!" अश्विनी का कहना है कि वह इन रोजमर्रा के अनुभवों को साझा करती हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि हमारे शास्त्रीय संगीत को थोड़ा और गंभीरता से लेने की जरूरत है। यह ईमानदार स्वभाव न केवल उनकी समृद्ध स्तरित, बारीक केंद्रित और नाजुक रूप से बारीक आवाज में बल्कि राग गायन के लिए उनके अत्यधिक स्पष्ट दृष्टिकोण में भी प्रतिबिंबित होता है। उनके

सुविचारित प्रदर्शनों को हड़ताली प्रतिध्वनि और स्पष्टता, अनुपात की अलौकिक भावना, त्रुटिहीन उच्चारण, डिजाइन और वितरण के स्पर्श से अलंकृत किया जाता है। कोई आश्चर्य नहीं कि उनका संगीत उनके मंत्रमुग्ध दर्शकों के लिए एक भावनात्मक अनुभव है, जिसमें समझदार और सामान्य श्रोता दोनों शामिल हैं।

निर्णय क्षमता :–

आप भाभा अनुसंधान संस्थान मुंबई में वरिष्ठ वैज्ञानिक थे और बहुत अच्छा कर रहे थे। उन्होंने शास्त्रीय गायिका के रूप में भी नाम कमाया था। आप उस समय बहुत अच्छा कर रही थी और दोनों क्षेत्रों में अपने लिए जगह बनाई। आप चाहती तो आसानी से इसे जारी रख सकती थी, लेकिन आपने विज्ञान के क्षेत्र में अपना करियर छोड़ने का फैसला किया और संगीत को चुना। "एक प्रतिभाशाली व्यक्ति हर क्षेत्र में अच्छा करेगा लेकिन यह चुनना कि क्या छोड़ना है, बहुत मुश्किल काम है। यह फैसला बहुत कम लोग ले पाते हैं। वह ऐसा करने में सक्षम है, क्योंकि आपकी निर्णय क्षमता उच्च कोटि की है यह इस संदर्भ से पता चलता है।

गायन शैली और संगीतमय तरीका :–

एक समृद्ध और मधुर आवाज के साथ संपन्न, अश्विनी ताई की शैली रागदारी के लिए सरलता और मजबूत पालन दिखाती है, जबकि सौंदर्यशास्त्र की समृद्ध भावना और अत्यधिक भावनात्मक गुणवत्ता को बनाए रखती है। अपनी मां माणिक ताई और किशोरी ताई के प्रभाव को उनकी गायकी की लयबद्ध अनुभूति में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। जयपुर–अतरौली, मेवाती और पटियाला घरानों से प्रभावित होने के कारण अश्विनी ने अपनी स्वतंत्र संगीत शैली बनाई है। वह तीन स्वर सप्तकों पर एक मजबूत कमान रखती है। हालांकि स्वभाव और प्रशिक्षण से शास्त्रीय, ठुमरी–दादरा और भजन, अभंग जैसी हल्की किस्मों के साथ समान रूप से सहज और स्वाभाविक रूप से प्रस्तुत करती है। इसके अलावा, भारतीय संस्कृतभाषा में उनका प्रवाह स्तोत्रोंध्स्तुतियों को शामिल करके उनके प्रदर्शनों की सूची को और समृद्ध करता है। अश्विनी ने अपनी कई भक्तिमय प्रस्तुतियों का संगीत स्वयं बनाकर अपने भक्ति प्रदर्शनों की सूची में इजाफा किया है।

संगीतकार :–

अपनी मां माणिक ताई को एक संगीतकार, गुरु रूप में है, जिन्होंने कई अभंग को धुन दिया है, जिनमें से कई को उनकी बेटी और शिष्य डॉ अश्विनी भिड़े–देशपांडे द्वारा रिकॉर्ड और रिलीज किया गया है। भिडे–देशपांडे का एक अंतरंग समझ है बंदिश और बंदिश–रचना और अपने खुद के बंदिशे है, जो वह अपनी पुस्तक में प्रकाशित किया गया है के कई पैदा कर दी है राग ''रागराचनंजलि खंड 1'' (2004) बंदिश ग्रंथ है। ''रागराचनंजलि खंड 2'' बंदिश ग्रंथ, जिसमें 98 और बंदिशें (रचनाएँ) शामिल हैं, 2010 में प्रकाशित हुई थीं। वह अपने भजनों की स्थापना के लिए भी जानी जाती हैं, विशेष रूप से कबीर के भजनों के लिए। रागराचनंजलि खंड 1–2 इस ग्रंथ को संगीत की दुनिया में बहुत अच्छी समीक्षा मिली है और इसकी संगीत रचनात्मकता और कलात्मक प्रस्तुति के लिए इस प्रयास की सराहना की गई है। अश्विनी भिड़े न केवल एक संगीत विद्वान हैं, बल्कि एक सुंदर आवाज से भी धन्य हैं। मैं व्यक्तिगत रूप से अश्विनी को उनकी शुरुआती किशोरावस्था से जानता हूँ और उन्हें इस तरह के एक अद्भुत ख्याल गायिका के रूप में खिलते हुए देखकर मुझे बहुत खुशी होती है। उन्होंने भारत के शीर्ष युवा कलाकारों में से एक होने की प्रतिष्ठा अर्जित की है... कई पुरानी रचनाओं को सीखने के बाद, उन्होंने अपनी बोलियों के माध्यम से परंपरा की भावना को बनाए रखने के साथ–साथ विषय वस्तु पर ध्यान देने में सक्षम है! – रविशंकर

संगीत रिकॉर्डिंग :–

अश्विनी भिड़े का पहला रिकॉर्डिंग एल्बम 1985 में एचएमवी द्वारा जारी किया गया था और उसके बाद रिदम हाउस, सोनी म्यूजिक, म्यूजिक टुडे, टाइम्स म्यूजिक, नवरस रिकॉर्ड्स और यूनिवर्सल म्यूजिक सहित कई अन्य बैनरों के तहत इसका अनुसरण किया गया। इनमें से कुछ विशेष की शास्त्रीय तथा उप शास्त्रीय रचनाओं की सूची –

(HMV ;1985) – राग यमन, राग तिलक कामोद, भजन अश्विनी भिड़े का परिचय।

(रिदम हाउसय1987) – राग पूरिया धनश्री, राग भूप, भजन रिदम हाउस क्लासिक।

(HMV; 1988) – राग केदार, राग खंबावती, राग भूप नट अश्विनी भिड़े गाती हैं।
(रिदम हाउसय 1989) – राग नंद, राग बागेश्री लाइव फॉर फेमिना।
(रिदम हाउसय 1990) – राग ललित, राग विभासी मॉर्निंग रागस वॉल्यूम 1
(रिदम हाउसय1990)–राग तोड़ी,राग कबीर भैरव,राग सुखिया बिलावल मॉर्निंग रागस वॉल्यूम 2।
(संगीत आज य 1990) –''जेही सुमिरत सिद्धि होई,'' ''जय श्री शंकर सुत गणेश,'' ''जय गणेश गणनाथ,'' ''गणपत विघ्न हराना'' भक्तिमालाः गणेश वॉल्यूम 2।
(म्यूजिक टुडेय 1991) – ''ज्वालातकोटि बालार्क,'' ''तेरो चक्कर करे पुकार,'' ''जय जय जय गिरिराज किशोरी,'' ''मैं धरु तिहारो ध्यान'' भक्तिमालाः शक्ति वॉल्यूम 2।
(म्यूजिक टुडेय 1991) – ''मधुराष्टकम,'' ''म्हारी सुरता सुहागन,'' ''कैसी होरी मचाई,'' ''सुंदर बदन सुख,'' ''का करूं ना माने'' भक्ति मालाः कृष्णा वॉल्यूम 2।
(आज का संगीतय 1991) – भक्तिमालाः नामस्तोत्रम गणेश भजन।
(म्यूजिक टुडेय 1992) – राग भीमपालस, राग शुद्ध कल्याण यंग मास्टर्स।
(अलूरकरय 1996) – राग बिहाग, राग भिन्न षड्ज, भजन राग रंग वॉल्यूम 1।
(अलूरकरय1996)–राग मधुवंती, राग झिंझोती, राग जोग, राग नायकी कनाड़ा राग रंगवॉल्यूम 2।
(सागरिकाय 1998) – अभंग पंढरपुरीचा नीला।
(नवरास रिकॉर्ड्सय 1998) – राग अहीर भैरव, राग जौनपुरी, भजन, वुमन,द एज।
(निनाद संगीतय 1999)–राग जयजयवंती, राग वाचस्पति, राग मेघ मल्हार, झूला, भजन, कृष्णा।
(मेघ संगीतय 2000) – अभंगास, आनंदचा कांड।
(अलूरकरय 2000) – राग बिलासखानी तोड़ी, राग गुजरी तोड़ी, राग नट भैरव,अश्विनी भिड़े–देशपांडे वॉल्यूम 1।
(अलूरकरय 2000)–राग रागश्री, राग दुर्गा, राग यमन, अश्विनी भिड़े–देशपांडे वॉल्यूम 2
(टाइम्स संगीत य 2000) – राग मुल्तानी, राग गौड़ मल्हार, भजन,गोल्डन राग संग्रह।
(म्यूजिक टुडेय 2002) – राग झिंझोटी, राग नायकी कणाद,स्वर उत्सव।
(सोनी म्यूजिक य 2002) – भजन,नवग्रह पूजा।
(इंडिया आर्काइव म्यूजिकय2003)–राग बागश्री,राग केदार,भजन,अश्विनी भिड़े–देशपांडे– वोकल।
(स्व–प्रकाशितय 2004) – अभंग रूप पहाता लोचनी।
(राजहंस प्रकाशनय 2004)–स्वयं रचित बंदिशों की पुस्तक और सीडी, रागराचनंजलि 1
(स्व–प्रकाशितय 2005) – रागस भोगी और प्रतीक्षा, झूला, दादरा,कारी बदरिया।
(सेंस वर्ल्ड म्यूजिकय 2006) – राग बागश्री, भजन, संध्या।
(स्व–प्रकाशितय 2009) – सूरदास, भजन।
(स्व–प्रकाशितय 2010)–राग विभावती, पुरिया धनश्री, राग पटदीप, राग मालकौंस, उन्मेश।
(राजहंस प्रकाशनय 2010)–स्वयं रचित बंदिशों की पुस्तक और सीडी,रागराचनंजलि 2।
(ईस्ट मीट्स वेस्टय 2013)– उत्सव जनसंमोदिनी, उत्सव बैरागी तोड़ी, उत्सव नंदाधवानी, उत्सव उत्सव चारुकौं, उत्सव पंचम से गारा।

संगीत के विभिन्न समारोह :–

पंडित.संजीव अभ्यंकर के साथ उनके 'जसरंगी जुगलबंदी संगीत कार्यक्रम' को दर्शकों से मिली–जुली प्रतिक्रिया मिली। अश्विनी भिडे–देशपांडे ने 2019 में टोरंटो के राग–माला म्यूजिक सोसाइटी के लिए टोरंटो, कनाडा में आगा खान संग्रहालय सहित दुनिया भर के प्रतिष्ठित स्थानों पर प्रदर्शन किया है। अश्विनी ने विभिन्न प्रतिष्ठित संगीत सम्मेलनों और संगीत सम्मेलनों में भाग लेते हुए दुनिया भर में बड़े पैमाने पर यात्रा की है। उनके लाइव संगीत समारोहों को उनकी प्रस्तुति के आनंद के साथ–साथ सौंदर्य और संगीत की गुणवत्ता के लिए भी सराहा गया है। आकाशवाणी और दूरदर्शन के 'शीर्ष ग्रेड' कलाकार, अश्विनी ने कई राष्ट्रीय कार्यक्रमों और आकाशवाणी संगीत सम्मेलनों में भाग लिया है। योग्यता की शिक्षिका के रूप में, अश्विनी अपने होनहार शिष्यों को गुणवत्तापूर्ण समय देती है, जिससे जयपुर गायकी की समृद्ध परंपरा की निरंतरता सुनिश्चित होती है। अश्विनी ने विभिन्न स्कूलों, कॉलेजों और संगीत सभाओं में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत पर व्याख्यान–प्रदर्शनों में नियमित रूप से भाग लिया है और भारत और विदेशों में अनपेक्षित दर्शकों के ज्ञान में योगदान दिया है। लोणावला–खंडाला संगीत समारोह–2019

ग्रंथ प्रकाशन :–

1. रागराचनंजलि 1 (राजहंस प्रकाशनय 2004) – स्वयं रचित बंदिशों का ग्रंथ और सीडी
2. रागराचनंजलि 2 (राजहंस प्रकाशनय 2010) – स्वयं रचित बंदिशों का ग्रंथ और सीडी
3. मैडम क्यूरी – मॉडलम कवी (2015)–मैरी क्यूरी की ईव क्यूरी की जीवनी का मराठी अनुवाद
4. संदर्भ'' 'नवीनता के नाम पर स्वतंत्रता नहीं लेनी चाहिए' ''द हिंदू। 11 दिसंबर 2016।
5. ''अश्विनी भिडे देशपांडे आगा खान संग्रहालय में (27 अप्रैल, 2019)''। आगा खान संग्रहालय। 3 नवंबर 2020 को लिया गया ।

''एक अभिनव शाम राग''। द टेलीग्राफ। 27 जुलाई 2007।

मान सम्मान :– हिंदुस्तानी शास्त्रीय गायन संगीत में विदुषी अश्विनी भिड़े के योगदान को पुरस्कारों और उद्धरणों के माध्यम से सराहना गया है। जून 2015 में,उन्हें 2014 के लिए संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार प्राप्तकर्ता घोषित किया गया था। वह पहली महिला हिंदुस्तानी गायिका थीं जिन्हें 2005 में मध्य प्रदेश सरकार द्वारा प्रतिष्ठित ''राष्ट्रीय कुमार गंधर्व सम्मान'' से सम्मानित किया गया था। वह 2011 के लिए

महाराष्ट्र सरकार ''संस्कृति पुरस्कार'' और 2010 के लिए सह्याद्री दूरदर्शन ''संगीत रत्न'' पुरस्कार की प्राप्तकर्ता थीं। उन्हें 2014 में पहले ''गानतपस्विनी मोगुबाई कुर्डीकर सम्मान'' और बैंगलोर किडनी फाउंडेशन के ''पंडित मल्लिकार्जुन मंसूर पुरस्कार'' से सम्मानित किया गया था। 2013 में उन्हें उस्ताद के 75 वें जन्मदिन समारोह के अवसर पर ''पंडित जसराज गौरव पुरस्कार'' से सम्मानित किया गया था।

शिष्य परंपरा :– धनाश्री घैसास, सानिया पाटणकर, रेवती कामत, श्रुती आंबेकर, शिवानी कल्याणपुर (हलदीपूर), सायली ओक

तात्पर्य :– प्रस्तुत शोध प्रबंध में रागरचनांजलि ग्रंथ के रचयिता विदुषी अश्विनी भिडे देशपांडे का जीवन दर्शन किया गया है। अध्ययन से या ज्ञान होता है कि अश्विनी जी को जन्म से ही संगीत की शिक्षा अपनी माता से प्राप्त हुई। इनके जीवन चरित्र का अध्ययन करने से यह ज्ञात होता है यह बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी है। संगीत के साथ साथ इन्हें विज्ञान संशोधन में विशेष महारथी है,तथा अध्यात्म, किताब पढ़ना तथा संगीत एवं विज्ञान से संबंध जोड़ना मुझे पसंद है। अपने जीवन में नोबेल पुरस्कार विजेता मेरी क्यूरी से अधिक प्रभावित हुई है। अध्ययन से इनमें विभिन्न गुण दिखाई देते हैं जैसे जिज्ञासु संगीतकार, निर्णय क्षमता, गायन शैली और संगीत में अपना अलग तरीका, अनेक संगीत रिकॉर्डिंग, संगीत के विभिन्न समारोह में सक्रिय प्रतिभाग, और लंबी शिष्य परंपरा दिखाई देते हैं। जयपुर अतरौली घराने के प्रसिद्ध गायिका तथा रागरचनांजलि ग्रंथ के रचयिता विदुषी अश्विनी भिडे देशपांडे अपने आप में महान कलाकार है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. देशपांडे वा.ह.(2012),घरंदाज गायकी, मौज प्रकाशन ग्रुह, मुंबई P-NO- 69
2. देशपांडे पं.स.भ.(2006), संगीत अलंकार, किर्ति प्रकाशन, औरंगाबाद, P-NO-47
3. भिड़े–देशपांडे डॉ. अश्विनी (2010), रागरचनांजलि 2 खंड, राजहंस प्रकाशन,पुणे P-NO-4
4. मिश्र पंडित विजय शंकर(2009) भारतीय संगीत के नए आयाम, कनिष्ठ पब्लिशर्स डिसटीब्यूटर्स नई दिल्ली पुष्ट क्रमांक135
5. नेगी डॉ. सरिता (2014), विविध घरानों की राग चर्चा, ग्लोबल जर्नल आफ अप्लाइड, पॉलीटिकल, स्पोर्ट्स एंड साइंसेस.P-NO-194
6. मेहता सुमिता (2014), विविध घरानों की राग चर्चा, ग्लोबल जर्नल आफ अप्लाइड, पॉलीटिकल, स्पोर्ट्स एंड साइंसेस. P-No-144